अष्टाङ्गसार

(अष्टाङ्ग हृदय व अष्टाङ्ग संग्रह सूत्रस्थान के विशिष्ट बिन्दु व अष्टांग हृदय के ससंदर्भ बहु–विकल्प प्रश्न)

लेखक

डॉ. सुचेता वर्मा

बी. ए. एम. एस., एम. डी. (मौलिक सिद्धान्त विभाग),

राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान, जयपुर (राज.)

डॉ. मनीता अहलावत

बी. ए. एम. एस, एम. डी. (रोग एवं विकृति विज्ञान विभाग)

राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान, जयपुर (राज.)

आयुर्वेद संस्कृत हिन्दी पुस्तक, भण्डार

जयपुर

प्रकाशक

जगदीश संस्कृत पुस्तकालय

शोरूम– भगवानदास मार्केट के सामने, तेलीपाडा
वाली गली के अन्दर, चौडा रास्ता, जयपुर (राजस्थान)
फोन नं.- 0141-2562577

हैड ऑफिस– झालानियों का रास्ता, किशनपोल बाजार
जयपुर-302001 (राजस्थान)

© **जगदीश संस्कृत पुस्तकालय, जयपुर**

ISBN : 978-93-89814-18-7

प्रथम संस्करण 2020

मूल्य – 255

प्रमुख वितरक

आयुर्वेद संस्कृत हिन्दी पुस्तक भण्डार

झालानियों का रास्ता, किशनपोल बाजार
जयपुर-302001 (राजस्थान), दुरभाष - 2312974

लेजर टाईप सैटिंगः – सरस्वती कम्प्यूटर्स, जयपुर।

मुद्रक :– वी. आर. प्रिन्टर्स, जयपुर।

Shri Krishna Ayush University Kurukshetra

(Established by the State Leislature Act-25 of 2017)
Umri Road, Sector-8, Kurukshetra, Haryana-136118

शुभाशीष

अष्टाङ्ग सार (सूत्रस्थान) (बृहत्त्रयी का एक अंग) आयुर्वेद के संकलन और प्रस्तुति के संबंध मे अपने अधिकार और प्रमाणीकरण के लिए एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। चिकित्सीय क्षेत्र के साथ–साथ शिक्षण क्षेत्र में इस संहिता का स्वीकार्यता देखने को मिलती है। प्रतियोगी प्रवेश परीक्षा के लिए अध्ययन करना हमेशा कठिन होता है, क्योंकि ज्ञान को आत्मसात करनें और उसे स्मरण रखने का कोई आसान मार्ग नहीं है।

प्रस्तुत ग्रंथ ''अष्टाङ्ग सार (सूत्रस्थान)'' अष्टाङ्ग हृदय व अष्टाङ्ग संग्रह के सूत्रस्थान के महत्वपूर्ण बिन्दुओं के साथ कई विकल्प प्रश्नों (mcq) के रूप में प्रस्तुत की गई पुस्तक है। यह पुस्तक आयुर्वेदिक स्नातक व स्नातकोतर छात्रो के लिए विभिन्न प्रवेश परिक्षाओं की तैयारी के लिए उपयोगी सिद्ध होगी।

- ❖ प्रश्नों को ससन्दर्भ, मूलपाठ व हिन्दी अर्थ के साथ प्रस्तुत किया गया है। जिससे कि प्रश्नो की प्रमाणिकता व सुगमता बनी रहे।
- ❖ विभिन्न परीक्षाओं (P.G entrance, UPSC, CCRAS Etc.) में आये हुए प्रश्नों पर विशेष रूप से प्रकारश डाला गया है।
- ❖ अष्टांङ्ग संग्रह एवम् अष्टांग हृदय के सूत्रस्थान के अध्यायों अनुसार विशिष्ट बिन्दुओं (Short Notes) का संकलन किया गया है।

मैं इस उपलब्धि को हासिल करने के लिए लेखिकाओं के प्रयास की सराहना करते हुए उन्हे बधाई देता हूँ व उज्जवल और समृद्ध भविष्य की कामना करता हूँ।

प्रो. (डा.) बलदेव कुमार
कुलपति

शुभाशीष

आयुर्वेद मात्र एक चिकित्सा शास्त्र ही नहीं, अपितु जीवन जीने की एक कला है। इसके मूलभूत सिद्धांत युगों – युगों से समाज की सुरक्षा एवं व्याधियों के निवारण में उपयोगी सिद्ध हुए हैं। आयुर्वेदशास्त्र के व्यवहार हेतु इसके मूलभूत सिद्धांतों का अवबोध होना परम आवश्यक है।

मौलिक साहित्य के निर्माण के साथ–साथ साहित्य संकलन एवं उसका सरल सुबोध वर्णन आयुर्वेद साहित्य के भंडार को समृद्ध करने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता हैं।

अष्टांग हृदय वृहत्तयी का महत्वपूर्ण अंग है। यह अष्टांग संग्रह का ही सार माना जाता हैं। जो कि चरक संहिता एवं सुश्रुत संहिता जैसे विशाल एवं विस्तृत ग्रंथों का महर्षि वाग्भट्ट द्वारा युगानुरूप परिवर्तन था। अष्टांग संग्रह की प्रमुख विशेषता सूत्रस्थान है, यदि सूत्रस्थान के विषयों का अवबोध सही हो तो सिद्धातों के प्रायोगिक प्रयोग करने पर अवश्य ही सफलता प्राप्त होती हैं।

विषयों का संकलन, सरलता से प्रस्तुतिकरण विज्ञान क्षेत्र से आयुर्वेद कोर्स में प्रवेश लिए हुए छात्र – छात्राओं के लिए बहुत लाभदायक होता हैं। कठिन विषय भी सुगम तथा सुग्राह्य हो जाते हैं।

यह पुस्तक अष्टाङ्ग सार लेखिका का प्रथम प्रयास है जिसमे प्रमुख विषयों का संकलन, संदर्भ सहित व्याख्या एवं हिंदी व्याख्या भी हैं। इसके साथ प्रवेश परीक्षाओं में पूछे गये प्रश्नों का संग्रह भी है। मुझे आशा ही नहीं, पूर्ण विश्वास है कि यह पुस्तक निश्चित ही छात्र–छात्राओं के लिए उपयोगी सिद्ध होगी। इसके साथ ही लेखिका को हार्दिक शुभकामनाएं तथा बहुत–बहुत शुभाशीष देती हूँ।

डॉ. शैलजा भट्टनागर

एसोसिएट प्रोफेसर, मौलिक सिद्धान्त विभाग

राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान, जयपुर

आभार

वसुदेवसुतम् देव कंस चाणूर मर्दनम्। देवकी परमानन्दं कृष्णं वन्दे जगद्गुरम्।।

सर्वप्रथम मेरे पितृजो, मेरे इष्ट देव श्री राधागोविन्द देव जी, मेरे माता एवम् पिताजी श्रीमति शकुन्तला देवी व श्री तारा चन्द जी, सास एवम् ससुर जी श्रीमति तारा देवी व श्री ओमप्रकाश जी का श्रद्धापूर्वक आभार व्यक्त करती हूँ। जिनके आर्शीवाद के बिना ये कार्य असम्भव था।

मैं गुरूवर डॉ. बलदेव कुमार धीमान (प्राफेसर एवम् कुलपति संस्थापक, श्री कृष्णा आयुष विश्वविद्यालय कुरूक्षेत्र, हरियाणा) एवम् श्रीमति हेतल एच. दवे (एसो. प्रोफेसर, प्रसूति तन्त्र व स्त्री रोग, राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान, जयपुर का तहे दिल से आभार व्यक्त करती हूँ जिनके मार्गदर्शन से लेखन कार्य हेतु प्रेरणा मिली।

मैं गुरूजी स्वर्गीय डॉ. गोविन्द पारीक (पूर्व एसो. प्रोफेसर, मौलिक सिद्धांत विभाग राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान, जयपुर) का दिल की गहराईयों से धन्यवाद करती हूँ क्योंकि उनकी निर्मल छवि हमेशा हमारा प्रेरणास्त्रोत रहेगी और लेखन कार्य के लिए प्रेरित करती रहेगी।

मैं पूजनीय गुरूजनों डॉ. केदार लाल मीणा (प्रोफेसर एवं पूर्व विभागाध्यक्ष, मौलिक सिद्धात विभाग, राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान, जयपुर), डॉ. निशा गुप्ता (प्रो. व वर्तमान विभागाध्यक्ष, मौलिक सिंद्धात विभाग, राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान, जयपुर), डॉ. असित कुमार पांजा (एसो. प्रोफेसर, मौलिक सिद्धान्त, विभाग, राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान, जयपुर), डॉ. शैलजा भट्टनागर (एसो. प्रोफेसर, मौलिक सिद्धान्त विभाग, राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान, जयपुर) एवम् मेरे स्नातक कॉलेज श्री कृष्णा आयुष विश्वविद्यालय, कुरूक्षेत्र के समस्त गुरूजनों का आभार व्यक्त करती हूँ जिनसे मुझे आयुर्वेद का ज्ञान प्राप्त हुआ और हमेशा मेरा मनोबल बढ़ाया।

मैं अपने जीवसंगी डॉ. शशिकान्त वर्मा, भईया एवम् भाभी श्री अरविन्द वर्मा–श्रीमति सीमा वर्मा, श्री शेखर वर्मा – श्रीमति ममता वर्मा, श्री सुचेत वर्मा – श्रीमति पूजा, वर्मा नन्हें बच्चों कनिष्का, भावेश, प्रांजल, परिधि एवम् समस्त परिवार के सदस्यों का तहे दिल से आभार व्यक्त करती हूँ जिनके अतुलनीय सहयोग व उत्साहवर्धन से ये कार्य पूर्ण हो पाया हैं।

इस लेखन कार्य में सहयोग हेतु मेरे सभी अग्रजों, अनुजों, स्नातक व स्नातकोत्तर साथियों, महात्मा ज्योतिबा फुले महाविद्यालय के समस्त शिक्षक संकाय का आभार व्यक्त करती हूँ जिनसे समय–समय पर मैने सहयोग प्राप्त किया हैं।

मैं अपने वर्तमान कार्य क्षेत्र के समस्त छात्र–छात्राओं (विशेषतः कार्य सहयोग हेतु चेतन, सुनील, भोरविका, सुशील, हिंमाशी, आरती, साक्षी वर्मा, साक्षी यादव) का भी आभार व्यक्त करती हूँ। जिनको अध्यापन करवाते हुए मुझे इस कार्य की प्रेरणा मिली।

मैं श्री ओमप्रकाश शर्मा, आयुर्वेद संस्कृत हिन्दी पुस्तक भण्डार, जयपुर के प्रकाशक, सरस्वती कम्प्यूटर्स से टंकणकर्ता श्री कृष्ण शर्मा एवं रामबाबू शर्मा की हृदय से आभारी हूँ। जिनके सहयोग से पुस्तक लेखन कार्य समय पर ही पूरा हुआ।

अन्त में प्रत्येक उस व्यक्ति को साधुवाद जिनका जाने-अनजाने में ग्रन्थ लेखन में सहयोग प्राप्त हुआ एवं जिनका व्यक्तिशः नाम लेना संभव न हो सका।

उक्त प्रयास पाठकगणों के समक्ष प्रस्तुत किया जा रहा है व आशा है कि आयुर्वेद जगत को इसका लाभ मिलेगा। प्रयास के अंर्तगत किसी प्रकार की त्रुटि के संदर्भ में मार्गदशन के लिए आपकी आभारी रहूँगी

डॉ. सुचेता वर्मा

आभार

वसुदेवसुतम् देव कंस चाणूर मर्दनम्। देवकी परमानन्दं कृष्णं वन्दे जगद्गुरम्।।

सर्वप्रथम मैं अपने इष्ट देव श्री राधा गोविन्द देव जी, मेरे गुरूवर प्रो. पवन कुमार गोदतवार (विभागाध्यक्ष रोग एवं विकृति विज्ञान विभाग), प्रो. सुरेन्द कुमार शर्मा (रोग एवं विकृति विज्ञान विभाग), डॉ. बालकृष्ण सेवतकर एसो. प्रो., (रोग एवं विकृति विज्ञान विभाग), डॉ. रितु शर्मा (एसि. प्रो., रोग एवं विकृति विज्ञान विभाग), डॉ. प्रीति (प्राध्यापक, रोग एवं विकृति विज्ञान विभाग), डॉ. सोना गोयल (कंसलटेन्ट, रोग एवं विकृति विज्ञान विभाग), राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान, जयपुर एवम् मेरे स्नातक कॉलेज श्री कृष्णा आयुष विश्वविद्यालय, कुरूक्षेत्र के समस्त गुरूजनों को नमन करती हूँ जिनके आशीर्वाद व प्रेरणा से यह लेखन कार्य संभव हुआ।

डॉ. शिशिर कुमार मण्डल, एसो. प्रो. रोग एवं विकृति विज्ञान विभाग, अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान, दिल्ली की मैं हृदय से आभारी हूँ जिनके मार्गदर्शन से मेरा मनोबल बढ़ा।

ग्रंथ के लेखन में मेरे आदरणीय माता व पिता श्रीमति शकुन्तला देवी व श्री सुरेश कुमार, सास व ससुर श्रीमति सरिता व श्री विजय अग्रवाल, मेरे जीवन साथी डॉ. वरूण अग्रवाल व समस्त परिवारजन का सहयोग व आशीर्वाद ही मेरा सम्बल रहा।

रोग एवं विकृति विज्ञान विभाग, राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान, जयपुर के समस्त अग्रज व अनुज, स्नातक व स्नात्तकोत्तर मेरे सहपाठी व गंगापुत्रा आयुर्वेद मेडिकल कालेज, जीन्द के शिक्षण संकाय व विद्यार्थियों का आभार व्यक्त करती हूँ जिनका सहयोग व सुझाव समय - समय पर प्राप्त हुआ।

मैं श्री ओमप्रकाश शर्मा, आयुर्वेद संस्कृत हिन्दी पुस्तक भण्डार, जयपुर के प्रकाशक, सरस्वती कम्प्यूटर्स से टंकणकर्ता श्री कृष्ण शर्मा एवं रामबाबू शर्मा की हृदय से आभारी हूँ। जिनके सहयोग से पुस्तक लेखन कार्य समय पर ही पूरा हुआ।

अन्त में प्रत्येक उस व्यक्ति को साधुवाद जिनका जाने-अनजाने में ग्रन्थ लेखन में सहयोग प्राप्त हुआ एवं जिनका व्यक्तिशः नाम लेना संभव न हो सका।

उक्त प्रयास पाठकगणों के समक्ष प्रस्तुत किया जा रहा है व आशा है कि आयुर्वेद जगत को इसका लाभ मिलेगा। प्रयास के अंतर्गत किसी प्रकार की त्रुटि के संदर्भ में मार्गदर्शन के लिए आपकी आभारी रहूंगी।

डॉ. मनीता अहलावत